International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 06-01-2020; Accepted: 07-02-2020; Publihsed: 05-03-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 2; 2020; Page No. 07-11

हरिवंशराय बच्चन का आत्मकथा लेखन

Dr. Anil Kumar Singh
Assistant Professor, Department of Hindi, PGDAV College (Evening), New Delhi, India

सारांश

इस शोध आलेख में हिंदी के प्रसिद्ध लेखक डॉ. हरिवंशराय बच्चन द्वारा लिखित आत्मकथा के रचनात्मक पक्षों का अध्ययन किया जाएगा। ज्यादातर सुधी और विज्ञ पाठक इस बात से भलीभांति परिचित हैं कि बच्चन जी की सम्पूर्ण आत्मकथा चार भागों में स्वतंत्र रूप से प्रकाशित है, जो क्रमशः इस प्रकार हैं- 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ'(1969), 'नीड़ का निर्माण फिर'(1970), 'बसेरे से दूर'(1977), और 'दशद्वार से सोपान तक'(1985)। इस आत्मकथा के संपूर्ण मूल्यांकन से संबद्ध इस शोध आलेख को लिखने का मेरा मुख्य उद्देश्य यह है कि इसके उपरांत हिंदी के पाठक कम से कम निम्नलिखित जीवनगत सरोकारों से अवगत हो सकेंगे

- आमकथा विधा के रूप में इस रचना का क्या महत्त्व है?
- इस आत्मकथा में जीवन सर जुड़े किन प्रसंगों और घटनाओं का उपयोग किया गया है?
- व्यक्तित्व के विकास में जीवन के कष्टों, संघर्षों और प्रयासों की क्या भूमिका होती है?
- इस आत्मकथा के माध्यम से लेखक पाठकों को क्या संदेश देना चाहता है?
- हिंदी आत्मकथा लेखन में हरिवंश राय बच्चन क्या अवदान है?

शोध-परिकल्पना

डॉ. हरिवंश राय बच्चन का आरंभिक जीवन दुर्धर्ष संघर्ष से आच्छादित रहा है। जीवन की कठिनाइयों से हारना या टूटना उन्होंने कभी स्वीकार नहीं किया। यह जग जाहिर है कि बच्चन की सरस और तरल रचनाएँ सामान्य श्रोताओं के बीच काफी चर्चित रहीं। वहीं दूसरी तरफ अक्सर उनके जीवन के श्रेष्ठतम और संभ्रांत काल को आधार बनाकर हिंदी के श्रमजीवी आलोचक उनकी रचनाओं के प्रति बेहद कटु और नकार भाव भी रखते हैं। विद्वान् पाठकों के बीच उनकी आत्मकथा पर कई तरह की प्रतिक्रियाएं अभिव्यक्त हुईं, जिनमें से कुछ विद्वानों ने उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की तो कुछ आलोचकों ने उसे ख़ारिज तक कर दिया। इस शोध आलेख में उनकी आत्मकथा के निम्नलिखित दोनों पक्षों की पड़ताल की गई है -

- हरिवंश राय बच्चन की आत्मकथा के सबल पक्षों की पड़ताल
- हरिवंश राय बच्चन की आत्मकथा के निर्बल पक्षों की पड़ताल
- श्रोत सामग्री
- प्राथमिक सामग्री –हरिवंश राय बच्चन की आत्मकथा के चारों खंड
- अन्य सामग्री - हरिवंश राय बच्चन की आत्मकथा से संबंधित आलोचना पुस्तकें

उपर्युक्त दोनों प्रकार की सामग्री के गहन एवं सम्यक अध्ययन के उपरांत इस शोध के सभी पक्षों को सुनियोजित ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

हिंदी आत्मकथाओं का वातायन

हिन्दी में आत्मकथाओं की एक लंबी परंपरा रही है। सन् 1641ई. में बनारसीदास जैन द्वारा पद्य में लिखित 'अद्धर्कथा' हिंदी की पहली आत्मकथा है। आत्मकथा की आवश्यक शर्तों में से निरपेक्षता और तटस्थता को इसमें सहज ही देखा जा सकता है। इसमें लेखक ने अपने गुणों और अवगुणों का यथार्थ चित्रण किया है। अन्य कई गद्य विधाओं की तरह आत्मकथा का विकास भी भारतेंदु काल में ही हुआ। भारतेंदु ने अपनी पत्रिकाओं के माध्यम से इस विधा को लेखकीय मंच प्रदान किया। उनकी अपनी आत्मकथा 'एक कहानी कुछ आपबीती कुछ जगबीती' का आरंभिक अंश 'प्रथम खेल' शीर्षक से प्रकाशित हुआ था। गौर से देखें तो इस आत्मकथा में भारतेंदु ने आम बोलचाल के शब्दों का खुलकर उपयोग किया है, जो एक तरह से बाद की आत्मकथाओं के लिए आधार दृष्टि का काम करती है। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व हिंदी के आत्मकथा के विकास में 'हंस' के आत्मकथा विशेषांक का विशिष्ट योगदान रहा। इसमें जयशंकर प्रसाद, विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक, गोपालराम गहमरी, सुदर्शन, शिवपूजन सहाय, रायकृष्णदास आदि साहित्यकारों के जीवन के कुछ अंशों को प्रकाशित किया गया था। आगे राहुल सांकृत्यायन की आत्मकथा 'मेरी जीवन यात्रा' चार खंडों में प्रकाशित हुई। बृहत् आकार की यह आत्मकथा मूलतः वर्णनात्मक शैली में लिखी गई है। आजदी के आरंभिक वर्षों में देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की आत्मकथा प्रकाशित हुई, जिसका शीर्षक 'आत्मकथा' ही था। इस विस्तृत आत्मकथा में राजेंद्र बाबू ने

बड़ी सादगी और निश्छलता से अपने वैयक्तिक जीवन के साथ-साथ स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान देश की दशा और महात्मा गाँधी सहित अनेक राष्ट्र-सेवा में सलग्न महापुरुषों के योगदान का वर्णन किया है।

आजादी के बाद वियोगी हरि की आत्मकथा 'मेरा जीवन प्रवाह', यशपाल कृत 'सिंहावलोकन' का प्रकाशन हुआ। यशपाल की आत्मकथा की विशेषता उसकी रोचक और मर्मस्पर्शी शैली है। सन् बावन में शांतिप्रिय द्विवेदी की आत्मकथा 'परिव्राजक की प्रजा' प्रकाशित हुई। इसमें लेखक ने अपने जीवन के प्रारंभिक इकतालीस वर्षों की करुण कथा को स्थान दिया है। उसके एक साल बाद यायावर प्रवृत्ति के लेखक देवेंद्र सत्यार्थी की आत्मकथा 'चाँद-सूरज के बीरन' प्रकाशित हुई। साठ के दशक में प्रकाशित पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र की आत्मकथा 'अपनी खबर' बहुत चर्चित रही, क्योंकि इसमें उनके जीवन की विद्रूपताओं के बीच युगीन परिवेश की यथार्थ अभिव्यक्ति हुई है। तदंतर प्रकाशित आत्मकथाओं में वृन्दावनलाल वर्मा की 'अपनी कहानी' (1970 ई.), देवराज उपाध्याय की 'यौवन के द्वार पर' (1970 ई.), शिवपूजन सहाय की 'मेरा जीवन' (सन् 1985 ई.), प्रतिभा अग्रवाल की 'दस्तक ज़िंदगी की' (1990 ई.) और भीष्म साहनी की 'आज के अतीत' (2003) प्रकाशित हुई। यदि समकालीन आत्मकथा पर विचार किया जाए तो आजकल साहित्य में दलित आत्मकथाओं का दौर है। ओमप्रकाश बाल्मीकि कृत 'जूठन', मोहनदास नैमिशराय कृत 'अपने-अपने पिंजरे' और कौशल्या बैसंत्री कृत 'दोहरा अभिशाप' आदि आत्मकथाओं ने इस विधा को यथार्थ अभिव्यक्ति के माध्यम से नितांत भिन्न स्वरूप प्रदान करने और विमर्श के चौपाल पर पहुँचाने का कार्य किया साहित्यकारों के अलावा दयानंद सरस्वती, महात्मा गाँधी, रवीन्द्रनाथ टैगोर आदि महापुरुषों की आत्मकथाएँ भी हिंदी समाज के पाठकों में खूब चर्चित रहीं है, पर विस्तार भय से उनका विश्लेषण यहाँ नहीं किया जा रहा है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि हिंदी आत्मकथा साहित्य की एक लंबी यात्रा के बाद आज उस मंजिल पर आ पहुंचा है जहाँ वह आत्मश्लाघा की न्यूनता से मुक्त होकर मानव के स्वभाव एवं व्यवहार में शामिल गुण-दोषों को सच्चाई से व्यक्त करने में सक्षम है।

रचना-प्रक्रिया एवं विधागत वैशिष्ट्य

सामान्यतः भाषिक अभिव्यक्ति की दृष्टि से साहित्य को पद्य और गद्य के रूप में विभाजित किया जाता है। पुनः गद्य साहित्य के अंतर्गत निबंध, नाटक, कहानी, उपन्यास, जीवनी, आत्मकथा, यात्रा-वृतांत, आलोचना, रिपोर्ताज आदि विविध विधाएं अथवा गद्य-रूप भी स्वीकार किए जाते हैं। साहित्यिक विधा की दृष्टि से बच्चन की यह रचना एक आत्मकथा है। आत्मकथा शब्द 'आत्म' और 'कथा' के योग से बना है, इसलिए कथा-तत्व इसमें महत्वपूर्ण होता है और 'आत्म' शब्द रचनाकार के स्वयं उपस्थित होने का बोधक है। चूँकि "आत्मकथा में कथा का विशेषण 'आत्म' है। इस प्रकार इसका अर्थ हुआ कि किसी व्यक्ति के द्वारा स्वयं अपनी कथा का लेखन।"(1) ध्यान रहे यह आत्म न तो किसी कवि या गीतकार का क्षणिक घनीभूत आत्म होता है और न ही किसी निबंधकार का किसी विषय से संबंधित प्रतिक्रियात्मक आत्म। बल्कि इस आत्म में संबद्ध व्यक्ति का जन्म से लेकर कथा लिखने तक का आत्म उपस्थित रहता है, जिसमें उसके जीवन के छोटे-बड़े, तिक्त-मधुर सभी प्रसंग शामिल होते हैं। आत्मकथा लेखक अपने जीवन के अंतिम पड़ाव पर पहुंचकर अपने अतीत पर दृष्टिपात करता है और अपने जीवन में होश संभालने से लेकर अपने आत्मकथा लेखन तक के समय को स्मरण करके कथा-रूप देने का प्रयास करता है। अपने होश संभालने से पहले की घटनाओं को सामान्यतः वह अपने माता-पिता, परिवार के बड़े-बुजुर्गों, अन्य सगे-संबंधियों इत्यादि से छान-बिन करके पता लगाने की कोशिश करता है। इसके अतिरिक्त अपने पूर्वजों के पारिवारिक-वातावरण, रहन-सहन, धार्मिक-सामाजिक मान्यताओं को शोध के द्वारा पुनर्जीवित करने की चेष्टा भी करता है। ज्यादातर आत्मकथाओं में वंश-वृक्ष, जन्म-स्थान, भाई-बहन एवं अन्य पारिवारिक सदस्यों का उल्लेख करते हुए उनके स्वभाव, शिक्षा-दीक्षा, पद-प्रतिष्ठा, सामाजिक व्यवहार का परिचय देते हुए लेखक अपने व्यक्तित्व निर्माण को निरुपित करता है। अतः आत्मकथा में लेखक जीवन के घात-प्रतिघातों से निर्मित अपने व्यतित्व के निर्माण प्रक्रिया का लेखा-जोखा प्रस्तुत करता है।

आत्मकथा में परिवार एवं पूर्वजों के जीवन को छोड़कर लेखक समान्यतः अपने भोगे हुए जीवन को घटनाओं एवं तथ्यों के सहारे वर्णित करता है, इसलिए पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किए गए प्रसंगों में यथातथ्यता का आग्रह सदैव बना रहता है। आत्मकथा का लेखक स्वयं वही व्यक्ति होता है, जिसका जीवन उसमें चित्रित होता है, इसलिए स्व-लेखन उसकी दूसरी आवश्यक शर्त होती है। आत्मकथा को पाठक के द्वारा स्वीकृति तभी मिलती है, जब स्वार्थ, पक्षपात, अतिभावुकता आदि दुर्बलताओं से ऊपर उठकर लेखक तटस्थ होकर लिखता है। इस प्रकार आत्मकथा का तीसरा आवश्यक घटक तटस्थता है। चूँकि आत्मकथा एक साहित्यिक विधा है, इसलिए कलात्मकता का संधान आवश्यक माना जाता है और यह आत्मकथा का चौथा महत्वपूर्ण पक्ष है। वैसे आधुनिक काल की अधिकतर महान रचनाएँ शास्त्रीय एवं तात्विक समीक्षा के सांचे में नहीं अटतीं। वे बंधे-बाधाएं समीक्षा पद्धतियों और पुराने मानदंडों की चौहद्दी से बाहर झांकती और कई बार उनको तोड़ती प्रतीत होती है। 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' को इसी कोटि में रखना चाहिए, क्योंकि बच्चन ने अपनी आत्मकथा लेखन की प्रक्रिया के क्रम में 'गिबन', 'ईट्स' और मुख्य रूप से 'मानतेन' की आत्मकथाओं से प्रेरणा लेने का उल्लेख किया। दूसरी तरफ बच्चन भारतीय-सस्कृति और विराट चिंतन परंपरा में गहरी आस्था रखने वाले रचनाकार माने जाते है। जाहिर है इस रचना की सृजन-प्रक्रिया में उन्होंने अपने सश्लिष्ट अनुभवों को साधने के लिए कठिन परिश्रम

किया है। अतः यह आत्मकथा पढ़ते हुए जितनी सरल लगती है, उतनी है नहीं।

रचना में व्यक्त भाव एवं विचार

इस आत्मकथा में बच्चन जी ने अपने वंशजों का रोचक वृतांत प्रस्तुत किया है। उन्होंने अपने वंश से जुड़े साक्ष्यों को खंगालते हुए इस कथा को अतीत की सातवीं पीढ़ी तक पहुँचाया है। इस प्रसंग में वे अपने पूर्वज 'मनसा' नामक व्यक्ति के परताबगढ़ (प्रतापगढ़) के 'बाबूपट्टी' से इलाहाबाद के 'मुहल्ला चक' में आ बसने की कहानी बताते हैं, फिर आगे की कई पीढ़ियों के पारिवारिक जीवन एवं जीविका आदि से जुड़े संघर्ष का विस्तारपूर्वक वर्णन है। इस अंश का लेखन करते हुए लेखक बिल्कुल संयत और गंभीर दिखता है, उसमें कहीं भी व्यग्रता अथवा आपाधापी का भाव नहीं है। वह रुक-रूककर प्रत्येक वर्णन योग्य पारिवारिक प्रसंगों का कहीं आत्मीय तो कहीं तटस्थ भाव से उल्लेख करता है और परिवार के अंदर और समाज में हुई प्रतिक्रियाओं की थाह लेता है। साथ ही अपनी तटस्थ प्रतिक्रिया देता है और बीच-बीच में कुछ उद्धरणों को भी पाठकों के बीच रखता है। यथा- 'एकै धर्म,एक व्रत नेमा / काय बचन मन पति पद प्रेमा।" इन दो पंक्तियों की सहायता से लेखक बड़ी सरलता से अपनी माता 'सुरसती देवी' के स्वभाव को पाठकों के सामने स्पष्ट कर देता है। अपने बाबा भोलानाथ द्वारा ललितपुर छोड़ने की घटना को उल्लेख करते हुए लेखक उस समय की सामाजिक प्रतिक्रिया को एक स्थानीय कहावत के सहारे प्रस्तुत करता है- 'झाँसी गले की फाँसी, दतिया गले का हार, / ललितपुर मत छोड़िये, जब तक मिले उधार।' आगे लेखक स्पष्ट करता है कि इन "कहावतों के पीछे एक लंबा सामूहिक अनुभव विद्यमान रहता है जो जाति-जीवन में न जाने कितने अवसरों की कसौटी पर चढ़ता और अपना खरापन सिद्ध करता है।"(2) आरंभ में अपनी सात पीढ़ियों की कथा प्रस्तुत करते हुए, अपने विद्यार्थी और किशोर जीवन से जुड़े सबल-दुर्बल पक्षों के वर्णन क्रम में अपने स्वभाव एवं व्यवहारगत गुण-दोषों के प्रकटीकरण, फिर पहली पत्नी श्यामा की मृत्यु के समय के कारुणिक दृश्यों को रचते हुए लेखक निश्चित ही नीर-क्षीर विवेक का परिचय देता है।

रचना से पूर्व की तैयारी एवं अभिव्यक्ति-कौशल

आत्मकथा लिखने से पहले हरिवंशराय बच्चन ने इसकी भरपूर तैयारी की थी। 'आत्मकथा लेखन की मेरी प्रक्रिया' शीर्षक लेख में उन्होंने स्वीकार किया है कि "मैंने अपनी आत्मकथा अपने जीवन के छठे दशक में आरंभ की और सातवाँ दशक पूरा करते-करते समाप्त कर दी।...आत्मकथा लिखने से पूर्व मैं हिंदी और अंग्रेजी में उपलब्ध प्रायः सभी प्रसिद्ध आत्मकथाकारों की कृतियाँ पढ़ चुका था। गिबन, किपलिंग, ईट्स, मानतेन, रूसो, आंद्रे, मारा, सार्त्र, मालरो,(जिन्होंने अपनी आत्मकथा को एंटी-आटोबायोग्राफी का नाम दिया है) टैगोर, गोर्की, गाँधी, नेहरू, आदि; हिंदी में बनारसीदास से लेकर अपने अग्रज सुमित्रानंदन पंत तक सभी आत्मकथाएं मैंने पढ़ी है।"(3) ईट्स के साहित्य पर पीएच.डी. करनेवाले बच्चन उनसे काफी चमत्कृत होने की चर्चा करते हैं। वे लिखते हैं कि "जब वे लिखते हैं तो सदा ऐसी कल्पना करते रहते हैं कि टेबल की दूसरी तरफ कोई साधारण सा व्यक्ति बैठा है और वे उसे अपना लेखन-कथन संबोधित कर रहे हैं।"(4)

बच्चन अपनी आत्मकथा लेखन की प्रेरणा के रूप में फ्रांसीसी रचनाकार मानतेन की आत्मकथा की निर्णायक भूमिका का विस्तार से उल्लेख किया करते थे। बच्चन किसी रचनाकार के मूल्यांकन के लिए आत्मकथा के साथ उसकी दूसरी रचनाओं को भी शामिल करने के हिमायती प्रतीत होते हैं।

उनकी नज़र में ईमानदारी आत्मकथा की पहली शर्त है, किन्तु लेखक को अपनी ईमानदारी का प्रमाण देने की जरुरत नहीं होती, क्योंकि कलम के समक्ष ईमानदारी-बेईमानी छुपती नहीं। तुलसी के 'जन-रंजन सज्जन प्रिय एहा' उक्ति में वे अपने लेखन की लोक भूमिका के लिए विश्वास संचित करते हैं। बच्चन को लोकवादी तुलसी और उनकी रामचरितमानस बहुत प्रिय है।

गद्य लेखन का अभ्यास बच्चन जी ने अपने कैम्ब्रिज प्रवास के दौरान किया था और अपने शोधकाल में 'प्रवास की डायरी' लिखा था। वहाँ उन्होंने किसी रचना के लेखन से पूर्व ड्राफ्ट तैयार करने की विधि का उपयोग करना सीखा। बच्चन यह मानते हैं कि यदि अच्छा गद्य लिखना है तो मान्य प्रक्रिया यही है। वे अपनी आत्मकथा लिखने के लिए सुबह पाँच-छह पृष्ठ पेंसिल से लिखते थे और शाम को अंततः उसमें से दो पृष्ठ तैयार होता था। इस तरह हजार पृष्ठों की आत्मकथा के लिए उन्होंने कम से कम तीन हजार पृष्ठ लिखे। बच्चन जी अपनी आत्मकथा के बारे बड़े बेबाकी से स्वीकार करते हैं कि यह रचना मेरे "मानस-मन्थन का परिणाम है।

आत्मकथा लेखन में बच्चन का अवदान

साहित्य की अन्य विधाओं की तरह आत्मकथा भी समाज के सरोकारों से आवश्यक रूप से जुड़ा होता है। साहित्य का समाज से जुड़ाव उसमें व्यक्त भावों एवं विचारों के कारण होता है, इसलिए सचेत साहित्यकार भाव या विचारशून्य रचना में कभी प्रवृत नहीं होता। दरअसल किसी रचनाकार की श्रेष्ठता का आकलन उसकी रचनाओं में व्यक्त भाव और विचारों की सामाजिक उपादेयता से किया जाता है। इन भावों एवं विचारों के माध्यम से हमें यह पता चलता है कि व्यक्ति और समाज के बारे में लेखक की क्या समझ है? अपने जीवन काल में घटित होने वाले सामाजिक-राजनितिक परिवर्तनों के संदर्भ में वह क्या सोचता है और उनमें निजी तौर पर किस प्रकार की भूमिकाएं निभाता है?

वैसे तो 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' में मनुष्य जीवन से संबद्ध लगभग

सभी क्षेत्रों को समाहित किया गया है, किन्तु अध्ययन की सुविधा को ध्यान में रखकर इस रचना में व्यक्त विचारों को सामाजिक विचार, देश की स्वतंत्रता और आंदोलन से जुड़े विचार, धर्म-दर्शन संबंधी विचार, साहित्य और भाषा संबंधी विचार आदि श्रेणियों में विभाजित किया जाएगा। इस रचना में अपने परिवार और संबंधियों का चित्रण करते हुए बच्चन भारतीय सामाजिक जीवन के जाति व्यवस्था, परिवार व्यवस्था, स्त्री-पुरुष संबंध, विधवा स्त्रियों की दशा, सामाजिक कुरीतियाँ और अंधविश्वास, शिक्षा व्यवस्था जैसे कई पहलुओं का विश्लेषण करते हुए इन विषयों पर अपनी राय भी व्यक्त करते हैं। अपने विद्यार्थी जीवन में बच्चन जी ने भी कुछ दिनों तक अपने नाम के साथ 'वर्मा जोड़ा था, किन्तु शीघ्र ही उन्हें जाति-उपजाति की व्यर्थता का आभास हो गया। वे जातीय द्वेष से जुड़े कई प्रसंगों की चर्चा में अपने सबल तर्कों और महापुरुषों के स्वभावगत विशेषताओं के उदाहरणों द्वारा लेखक ने जातिगत क्षुद्रताओं से ऊपर उठकर जीने की सलाह देते हैं।

बच्चन की आत्मकथा के केंद्र में उनका अपना जीवन और परिवार है, इसलिए यहाँ महात्मा गाँधी या राजेंद्र प्रसाद की आत्मकथा की तरह राजनीतिक चर्चाएँ नहीं है। फिर भी भारतीय आजादी के निर्णयकारी काल के समानांतर रचे जाने के कारण कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं की चर्चा स्वाभाविक रूप से हो गई है तत्कालीन आंदोलनों और राष्ट्रीय नेताओं के त्याग और संघर्ष पर लेखक टिप्पणी करता है। जलियाँवाला बाग की घटना से पूरा देश व्यथित था, बच्चन का बालमन भी बहुत व्यथित होता है। वे राष्ट्रीय चेतना से आवेशित होकर जुलूसों में नारे लगाते हैं, नेताओं के जन-सभाओं में शामिल होते हैं, घर में चर्खा चलाते हैं, गावों में जाकर जनता से जागरुक होने का आह्वान करते हैं, स्वतंत्रता सेनानी में से श्रीकृष्ण और प्रकाशो को अपने घर में शरण देते हैं, लेकिन पारिवारिक चिंताओं के कारण पूर्णतः समर्पित होकर देश सेवा से नहीं जुड़ पाते।

लेखक मूलतः दार्शनिक होता है, क्योंकि वह मनुष्य के जीवन और जगत के संबंधों में विद्यमान सूक्ष्म परतों की सुधि लेकर समाज को सकारात्मक दिशा प्रदान करता है। वे विवेकानंद के जीवन की घटना को उद्धृत करते हुए लिखते हैं कि किस प्रकार बंगाली ब्राह्मणों ने उनकी ख्याति से ईर्ष्या करते हुए उन्हें अपमानित किया। "अमरीका जिसको सम्मान दे रहा है, भारत में तो उसे शुद्र समझा जाता है और उसे धर्म-प्रचार करने और धर्म के विषय में बोलने का कोई अधिकार नहीं हैं।"(5) इस आत्मकथा के वृतांतों को पढ़ते हुए आत्मा की सत्ता, जीवन-मरण, दुःख-विषाद, आत्महत्या आदि से संबंधित कई गहन मुद्दों पर लेखक ने अपने विचार व्यक्त किए हैं। अपने पहले लेख में ही बच्चन ने हैकल के मनुष्य में आत्मा की सत्ता नहीं स्वीकार करने को कड़ी चुनौती देते हुए लिखा था कि "यह योरोपीय संसार के लिए आश्चर्य करने की बात हो सकता है, किन्तु हिंदू तो अनादि काल से सब जीवों में आत्मा की सत्ता मानते हैं- आत्मा को अगर इस युग में 'इंडीव्युजुअलिटी'-व्यक्तित्व मान लें तो क्या हर्ज है। प्रकृति इतनी विविधामयी है कि उसने मनुष्य, पशु-पक्षी तो दूर एक-एक घास-पात को अलग व्यक्तित्व दिया है।"(6) आगे वे प्रकाशो और श्रीकृष्ण के प्रकरण में लगातार सामाजिक-आर्थिक मदद के बाद जब उनमें जीवन के प्रति सकारात्मक बदलाव नहीं देखते तो काफी दुखी हो जाते हैं। वे बड़ी निडरता से कहते हैं कि "जीवन के मारे हुओं के प्रति मेरे मन में संवेदना भले ही हो; प्रशंसक हूँ मैं जीवन से जूझनेवालों का ही।" बच्चन जी स्वीकार करते हैं कि "कर्म स्वभाव का प्रतिबिंब है, अकर्मण्य दृष्टिकोण मुझे अच्छा नहीं लगता।"(7) वे आत्महत्या के विचार की कड़ी भर्त्सना करते हैं- "जीवन की कितनी ही बड़ी चुनौती पर आत्महत्या करने की बात मैं नहीं सोच सकता, जो सोचता है वह मेरी दृष्टि में निरात्म है। मैं नरक में वास कर सकता हूँ, निरात्म का संग नहीं निभा सकता।"(8) मृत्यु जैसे जटिल मुद्दे पर जहाँ लोग ईश्वर की इच्छा मानकर अक्सर मौन हो जाते हैं, वहाँ लेखक खुलकर अपने विचार व्यक्त करता है और अपनी पत्नी की मृत्यु को आर्थिक दुर्बलता के कारण अच्छी चिकित्सा व्यवस्था न मिल पाने को जिम्मेवार मानता है। फिर जीवन की वास्तविकता को लेखक इन शब्दों में व्यक्त करता है-"पर दुनिया दुनिया है,...इधर लाश उठती है, उधर दुनिया के काम यथावत होने लगते हैं।...शरीर रहने तक मनुष्य को क्या-क्या सहना पड़ता है। शरीर छूटा कि सारे दुःख-दर्द, चिंताएं-व्यथाएं, शोक-संताप विलुप्त।"(9) उन्हें अपनी पत्नी की मृत्यु की गहन पीड़ा है, पर वे जीवन की जटिलता को भी जानते हैं। वे अपनी आत्मकथा में इन विचारों को व्यक्त करते हुए कम जीते-भोगते ज्यादा दिखाई देते हैं।

फ़िलहाल संक्षेप में कहा जा सकता है कि बच्चन मूलतः साहित्यिक प्राणी थे, इसलिए वे अपनी आत्मकथा के माध्यम से अपने पाठक को जीवन में आगे बढ़ते रहने और हिम्मत न हारने की प्रेरणा देते थे। इस प्रकार मानवीय संवेदनाओं के प्रति करुणा, जीवन मूल्यों के संदर्भ में सतर्कता, संबंधों के लिए समर्पण का भाव, राष्ट्र-सेवा में गहरी आस्था, कर्म के लिए निष्ठां एवं अनुशासन का पालन, दायित्व-बोध, रचना के लिए प्रतिबद्धता का भाव और निरंतर प्रयत्नशीलता से युक्त उनका व्यक्तित्व उनके साहित्य को लोकप्रिय बना देता है। वे 'कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती' का विचार अपनी आत्मकथा में भी रचते दिखाई पड़ते हैं।

4. संदर्भ सूची

1. सिंहल, डॉ. बैजनाथ, (1988) हिंदी साहित्य विधाएं: स्वरूपात्मक अध्ययन,चंडीगढ़, हरियाणा साहित्य अकादमी पृष्ठ-185
2. कुमार, अजित, (2006) बच्चन रचनावली, खंड-7, नई दिल्ली,राजकमल प्रकाशन, 81-267-1181-7,पृष्ठ-71
3. कुमार, अजित, (2006) बच्चन रचनावली,खंड-6,नई दिल्ली,

राजकमल प्रकाशन, 81-267-1181-7,पृष्ठ-450

4. कुमार,अजित, (2006) बच्चन रचनावली, खंड-7, नई दिल्ली,राजकमल प्रकाशन, 81-267-1181-7,पृष्ठ -15
5. वही...,पृष्ठ-261
6. वही...,पृष्ठ-260
7. वही...,पृष्ठ-220
8. वही...,पृष्ठ-220
9. वही...,पृष्ठ-261
10. हरिवंश राय बच्चन जीवनी - Biography of Harivansh Rai Bachchan
11. https://jivani.org/Biography/34/%E0%A4%B9%E0%A4%B0%E0%A4%BF%E0%A4%B5%E0%A4%82%E0%A4%B6-%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%AF-%E0%A4%AC%E0%A4%9A%E0%A5%8D%E0%A4%9A%E0%A4%A8-%E0%A4%9C%E0%A5%80%E0%A4%B5%E0%A4%A8%E0%A5%80---biography-of-harivansh-rai-bachchan
12. हिन्दी आत्मकथा का उद्भव एवं विकास - जगदीश चन्द्र http://shodhrachna.blogspot.in/2014/04/blog-post.html
13. आत्मकथा का विकास: मनीष और जगदीश सिंह http://vle.du.ac.in/mod/book/print.php?id=13262
14. बच्चन की आत्मकथा: डॉ. बृज किशोर वशिष्ट https://sol.du.ac.in/mod/book/view.php?id=1156&chapterid=1474
15. हरिवंश राय बच्चन: भारत के बेमिसाल व सर्वाधिक लोकप्रिय कवि- राजीव आनंद http://www. rachanakar.org/2014/11/blog-post_737.html
16. हरिवंश राय बच्चन http://bharatdiscovery.org/india/%E0%A4%B9%E0%A4%B0%E0%A4%BF%E0%A4%B5%E0%A4%82%E0%A4%B6_%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%AF_%E0%A4%AC%E0%A4%9A%E0%A5%8D%E0%A4%9A%E0%A4%A8